नशा!! — प्रेमचन्द

MAY
MONDAY
13

* "नशा" प्रेमचन्द की एक कहानी है। यह कहानी कॉलेज में पढ़ने वाले दो बच्चे (युवक) ईश्वर और बीर की कहानी है।
ईश्वरी एक जमींनदार का बेटा है तथा 'बीर' एक क्लर्क का।
* बहसों के दौरान बीर जमींनदार की तौर-तरीकों की आलोचना करता है
इस कहानी में समाज और मानव व्यवहार की वास्तविक की आलोचना करता है।

---

* कहानी का थीम: समाज और मानव व्यवहार की वास्तविकताएँ।

---

** कहानी की संवेदना :-> शराब की आदत से परिवार उजड़ जाता है।

* कहानी की कुछ बातें :-> ईश्वरी के घर से लौटते समय रेलगाड़ी में बीर ने अपने पास बैठे एक यात्री की पिटाई कर दी।

---

| कहानी का पात्र :- बीर, ईश्वरी, यात्री |

पहली कहानी - "बड़े घर की बेटियाँ" 1910 में 'ज़माना' में छपी
'सौत नाम' कहानी 1915 में
" सरस्वती में छपी।

2024

MAY
FRIDAY
131-235 DAYS

छोटी-छोटे [illegible] बाकियों से न बचते थे। ज़रा-
ज़ुरिये में क्या रखा था।
रुक्मती को ऐसा प्रतीत हुआ कि [illegible]
मोड़ उड़ रहा है। जब ४६-छिठे [illegible]
सब मैं ऐसे आध्यात्मिक भाव लगे। [illegible]
थी की भगवान ही रक्षा करे। अपना-सा [illegible]
चली गयी।"

---

* गल्प का जन्म संवत् 1850-60 की देन है।
* पुराने दृष्टान्त परिवर्तित होकर गल्प बन गये।
* सफल कहानी के लिए मनोरंजन और मानसिक [illegible]
में है एक आवश्यक है।"

1918-36 'प्रेमचन्द युग' के नाम से जाना जाता है

1934 में 'चाँद' मासिक पत्रिका में छपा था।

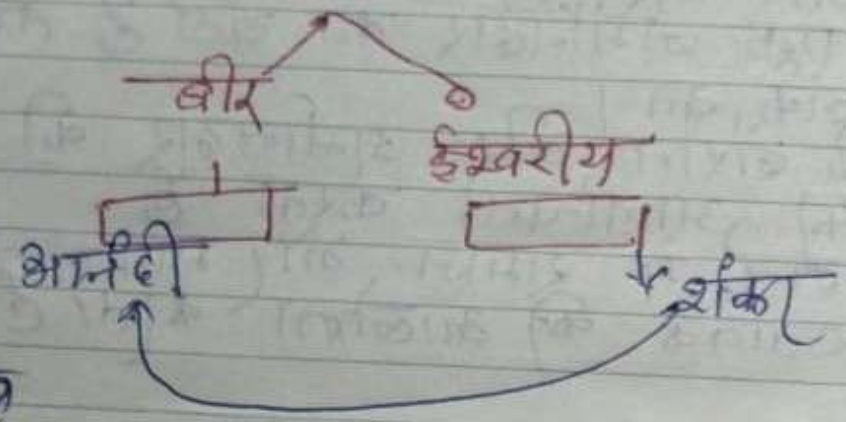




* 'आनंदी' नामक स्त्री इस कहानी के केन्द्र में है जो हमेशा शराबी पति शंका से त्रस्त रहती है। आनंदी और शंका का परिवार शराब की लत के कारण बिगड़ जाता है।
* सास की प्रताड़ना से आनंदी का जीवन शुरुआत होती है

| S | M | T | W | T | F | S |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

JUNE '24

MIL (Sev I)

08.02.24
Dr. Diwakar

# (बेटोंवाली विधवा)

प्रेमचन्द

* "समाज में विधवाओं की दुर्दशा और उनके संघर्षों को उजागर करना "बेटोंवालीवाली विधवा" का मुख्य उद्देश्य है।"

- इस कहानी में एक विधवा स्त्री का वर्णन है।
- इस कहानी में पति मृत्यु के बाद विधवा के सम्पत्ति चारों बेटा अधिकार जमा लेते हैं।
- कहानी में एक साधु विधवा को आत्मिक शांति और संतुष्टि प्राप्त करने का मार्ग बताता है दिखाता है।
- विधवा साधु से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में बदलाव लाने का प्रयास करती है।
- यह कहानी आज भी प्रासंगिक है क्योंकि विधवाओं के साथ भेदभाव उत्पीड़न प्रासंगिक है।

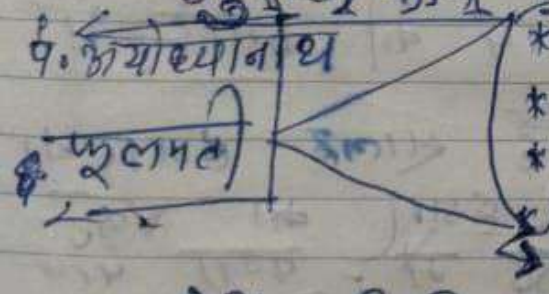

दयानाथ की पत्नी : फूलमती

मुख्य पात्र :

पं. अयोध्यानाथ — फूलमती

* कामतानाथ = 50रु० का नौकर था
* छोटा उमानाथ = डॉक्टरी पास कर चुका था
* दयानाथ = बी०ए० पास कर चुका था
* सीतानाथ = चारों में सबसे कुशाग्र बुद्धी का था।

→ कुमुद

* "बेटों वाली विधवा" कहानी को "The Aakil's publisher" ने 14 April 2020 को अंग्रेजी में प्रकाशित किया था।
* 'बेटोंवाली विधवा और अन्य कहानी' नाम से प्रेमचन्द की कहानी संग्रह प्रकाशित है।

* प्रेमचन्द 1920 " बेटोंवाली विधवा " की रचना की।

कथासारांश :- पंडित अयोध्यानाथ की पत्नी फूलमती चार बेटों की माँ थी। जबतक अयोध्या थी उसका राज चलता था परन्तु ज्यो ही विधवा हुई उसके ऊपर सारे बेटों और बहुए का राज चलने लगा।

सभी बेटे- अपने बहुए के साथ हो गये यहाँ तक तक अपनी बहन कुमुद की विदाई कर दिया। अपने को पाक-साफ समझ लिया अंत में

यह बुढ़िया (पंडिताइन) अयोध्यानाथ की पत्नी अपने बेटों को [illegible] छोड़ चली गई। गंगा में समा गई।

* " फूलमतीने कहा :- " माँ बाप की कमाई में बेटी का हिस्सा भी है। तुम्हें सोलह हजार का एक बाग मिला पच्चीस हजार का एक मकान। बीस हजार नकद में क्या पाँच हजार भी कुमुद का हिस्सा नहीं है" पृष्ठ 63.

* "धर्मात्मा लोग, जो पत्तल से उठ गये हैं, उनमें से ऐसा कौन है जो भेड़ बकरी का माँस नहीं खाता है? तालाब के कछुए तथा